पुलाव, ज़र्दा, बिरयानी का ज़िक्र चले और बासमती नाम न आए ऐसा हो ही नहीं सकता। हिमालय के तराई क्षेत्रों के बासमती की कोई क्या बराबरी कर सकता है! पर इडली बनाना हो तो कोई बासमती को नहीं पूछेगा। इसके लिए तो उबला चावल ही चाहिए होगा। तमिलनाडु के मैदानी इलाकों के उबले चावल से बेहतर और क्या होगा?

यानी स्वाद के अलावा और भी कई गुण हैं जो एक प्रजाति में फसलों की विभिन्नता को दर्शाते हैं। चावल के पौधे की पहचान है – लम्बी पतली पत्तियाँ, समानान्तर विन्यास (एकबीजपत्रियों की खास पहचान) और घास जैसे फूल। चावल की जंगली किस्में आज भी कई अनछुए जंगलों में पाई जाती हैं। लेकिन माना जाता है कि भारत में सबसे पहले छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के कुछ इलाकों में चावल की खेती शुरू हुई। आज भी छत्तीसगढ़ में चावल की कोई बीस हज़ार किस्में हैं।

बस्तर की बैंगनी धान
फोटोः जैकब नलिथानम

पूरे भारत में चावल उगाया जाता है। केरल से लेकर हिमालय तक। तुम अन्दाज़ लगा सकते हो कि कितनी अलग-अलग ऊँचाइयों, तापमान, मिट्टी की स्थितियों में यह उगाया जा रहा है। केरल के कुट्टानाद (औसत समुद्र तल से नीचे) में भी चावल उगाया जाता है और हिमालय क्षेत्र (औसत समुद्र तल से दस हज़ार फीट ऊपर) में भी। यह उन ठण्डे इलाकों में भी उगता है जहाँ तापमान 20 डिग्री के आसपास रहता है और वहाँ भी जहाँ गर्मियों में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। हर जगह की स्थानिक किस्में उस इलाके की मट्टी, पानी, मौसम के अनुरूप ढली हैं। इसी कारण हम इतनी विविधता पाते हैं। पूरी पृथ्वी के बारे में सोचोगे तो कितने अलग-अलग मौसम और भौगोलिक स्थितियाँ पाओगे। इसीलिए तो यहाँ जन-जीव-जीवन में इतनी विभिन्नता दिखती है। यही तो जैव-विविधता है!

(सहयोगः कैरन हैडॉक, जैकब नलिथानम)

शब्दपहेली

इस ग्रिड में **"फ"** से शुरू होने वाले कई सारे शब्द हैं। तुम्हें उन्हें खोजकर उन पर गोला लगाना है।

ख	फो	ड़ा	ग	फ	ली	ष	फ
फौ	ण	ठ	फू	ट	फु	र्ती	जू
ज	फ	फ	ल	ख	फ	स	ल
ठ	दा	की	ध	ग	र्श	फ	ज़्र
ग	फि	र	फ	ब	फूँ	र	ख
फँ	स	ध	ण	फा	ट	क	फी
फु	ल	का	ष	ड़	ग	ठ	का
स	र्र	ख	फे	रा	ष	फुं	सी

प्रस्तुति :
हरप्रीत क्वात्रा